



श्रीगुरुपादुकाभ्योनमः ॥ चित्तवृत्तिनाचम्य ॥ गुरुनमस्कार ॥ अङ्गादि ॥ वाक्
मार्तण्डार्घ्य ॥ अखण्डमण्डलाकारं इत्यादि ॥ गुरुनमस्कारादि ॥ ॥ सै ५ पद्मा
सनायपादुकां ॥ सै ५ कुम्भी सनायपादुकां ॥ सै ५ किशोर विज्ञे कोंकणायै ॥ अ
सनायपादुकां ॥ सै ५ फट् वज्रपंजरे स्वाहा ॥ सै ५ चलमकुले कुलमचले ॥
हस्तस्वाहा ॥ दसद्वारबंधने ॥ ॥ वतीशिन्याशः ॥ सिद्धिलक्ष्मी कुले श्वरीः
कोलीचिपुर ॥ ध्वनिदेवतायान्याशयाय ॥ ॥ जलपात्रार्घ्यपात्रपूजनं ॥

भूतसुधात्मपूजा ॥ ॥ ततोमालिनीपठेत् ॥ पञ्चवलिदद्यात् ॥ मोहनीफलय
ततोसोधनकारयत् ॥ हाभियामुलमंत्रेन स्वशिरशिपूज्य ॥ चन्दनभक्षण
पूजापूष्यादिकशक्तिपूजनम् ॥ भुविपात्रशक्त्यादिसर्वदत्ता ॥ षड्भक्त
पाठतर्पण ॥ प्रीतयेतावोकथनसह ॥ ॐ ह्रीं ॐ ॐ १६ शिवशक्तिसदाशिवेश्वर
भुवि विद्यातत्त्वं ह्रीं आत्मतत्त्वेन सुलेहं शोधयामि स्वाहा ॥ ॥ ह्रीं अदिभक्ष
तां ॥ ॐ अलिभक्षणां ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं करं ३५ मायाकलाअविद्याशगकारिणिनि
पतिपुरुषतत्त्वं ह्रीं विद्यातत्त्वेन शुष्मदेहं शोधयामि स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं यं १०ः

प्रत्यअहकार मनो बुद्धि श्रोत्रत्वक्कुक्षु जिह्वा घ्राणा वाग्वाणि पादपायुषस्था
 शब्दस्यर्श रूपरसगंधाकाशवायु तेजसलिलपृथ्वीतत्वं हूं शिवतत्त्वं पर
 देहं शोधयामि स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं औं १६ कैं खैं ३५ शिवशक्तिस्त्वा शिवे
 श्वर शुद्ध विद्यामाया कला अविद्या रागकारिणि नियति पुरुष प्रकृत्य हंका
 र मनो बुद्धि श्रोत्रत्वक्कुक्षु वाक्पाणि पादपायुषस्था शब्दस्यर्श रूपरसगंधा
 काश वायु तेजः सलिल पृथ्वी तत्त्वं हूं ॥ ४ ॥ सर्वतत्त्वेन सृजं जीवं शोध
 यामि स्वाहा ॥ ४ ॥ तत्रता मुलादिभ ॥ ५ ॥ शेने ॥ ताम्बुल पुग फल

सुर जायपत्री मिथि सुकम्पाल नारिकेर लवंग जातिफल सुरायुक्तं कर्तुं
 भवदेनम् ॥ आविधि ॥ मन्त्रेन विंदुत्रये स्वात्मानं भैरवरूपं देवीरूपं ध्यात्वा ॥ १ ॥
 श्रीसम्बर्त्ता आवाहनं ॥ त्रिदेव योगि ॥ वलि ॥ आवाह्य ॥ स्वस्वमुः पितृप्य
 गा ॥ ॥ ऐं नरासनाय ३ ॥ ऐं मयुरासनाय ३ ॥ ऐं मुसासनाय ३ ॥ ऐं ५ ॥
 प्ररत्नदीपधर्मा देवी श्रीमाहा काल क्षेत्रपालाय ॥ ३ ॥ ऐं ह्रीं श्रीकुलपुत्रवरु
 कनाथाय ३ ॥ ऐं ५ गौं गौं गौं श्रीकुलगणेश्वराय ३ ॥ वलि ॥ आवाह्य ॥ दण्डः
 तानी गजमुद्रा दर्शयेत् ॥ ॥ ततो कलशार्चनं ॥ ॐ नमः अस्तु यफू ॥

इत्यादि करंग न्याशः ॥ सें आधार हा नैये ३ ॥ सें क्षी राणी वाय ३ ॥ सें नाग सना
प ३ ॥ सें पत्र मनाय ३ ॥ सें के शरा सनाय ३ ॥ सें पद्मा सनाय ३ ॥ ॥ ध्यानं
॥ अद्वैतिक संकाशं विने चंचलमौलिनं । वरदाभय हस्त च मुद्रमा
लाधरं हरं ॥ एवं ध्यात्वा महादेवं दुःख कामार्थ सिद्धये ॥ इति ध्यान पुष्पं
नमः ॥ ॥ आधार ॥ वज्र ॥ ॐ जुं सः मृत्युं जयाय अमृतीश्वर महाभै
रवाय अमृत लक्ष्मी शक्ति सहिताय ॐ जुं सः ३ ॥ ॐ जुं सः वृह गौः ॥ वि
सुवे २ ॥ रुद्राय २ ॥ ईश्वराय २ ॥ सदा शिवाय २ ॥ ॐ जुं सः अमृतीश्व

राय मृज्जयाय नमः ॥ ३ पक्षाय २ ॥ ३ मार्ग शिवाय २ ॥ ३ सतवे २ ॥ ३ स
चतुस राय २ ॥ ३ क्षी रास प्रसमुडे भ्ये २ ॥ ३ इन्द्रादि दश लो कपाले भ्यो
नमः ॥ ३ आदि त्यादि नव गुहे भ्यो २ ॥ ३ अश्विन्यादि सप्त विं सति नक्ष
त्रे भ्यो २ ॥ ३ विष्कंभादि सप्त विं सति योगे भ्यो २ ॥ ३ मेघादि द्वाद शरा
शि भ्यो २ ॥ ३ मुहूर्ते भ्यो नमः ॥ ग ३ गंगा दि सप्त सागरे भ्यो २ ॥ ३ अस्त्र
स्थामादि द्वाद श चिरं जि वि भ्यो नमः ॥ ३ वशिष्ठादि सप्त ऋषि भ्यो २ ॥ ३
अनंतादि अष्ट कुलनागरा जे भ्यो २ ॥ ३ शान्ति कलाये २ ॥ ३ विद्या कर्त

ये २॥ ३ निवृत्तिकलाये २॥ ३ प्रतिष्ठाकलाये २॥ ३ त्रियांजलि ॥ ऐं ५ द्यौं
कुलवृक्षमहासेनसंमोहनसकलनिधिमंत्रदेवता कलातल धिप
नयेष्टमविष्णुरुडात्मने आत्मविद्या शिवतत्वाय हृदसट श्रीसंपूर्ण
सौ कलशमुन्नयिष्या ॥ ५ ॥ त्रिधा ॥ ४ ॥ वलि ॥ श्रीये नमः ॥ लक्ष्मीन
मः ॥ वलि ॥ आवाह्य ॥ धेनुमुन्दा ॥ जाप ॥ ॥ स्तोत्र ॥ रत्नौषधिसं
कलनिधजि लेन पूर्णा स्वच्छ वपुः शोभितपुष्पमाला ॥ जज्ञषु
योगविषयमुनिभिः प्रशस्ता ॥ त्वोकुम्भमुन्नी शिवशक्तिच्युतं नमामि

॥ वाक्यनसह ॥ अत्रगंधादि ॥ इतिकलशपूजा ॥ ॥ ततो कुम्भपूजनं ॥ न्याशाः ॥
ऐं ५ द्यौं ५ पुष्कर २ कनिष्ठकायनमः ॥ ऐं ५ घोरघोर तरतनु २ रूप आनामि
काय स्वाहा ॥ ऐं ५ चट २ पुचट २ मध्यमायवौषट् ॥ ऐं ५ कह २ वम २ तर्जः
नायह ॥ ऐं ५ दम २ घाटय २ अगुष्टायवषट् ॥ ऐं ५ विद्यातय २ विधि २ ऐं ३
फट् २ अस्ताफट् ॥ ॥ ऐं ५ द्यौं ५ पुष्कर २ हृदयाय नमः ॥ ऐं ५ घोरघोर तर
तनु २ रूप शिलसे स्वाहा ॥ ऐं ५ चट २ पुचट २ शिषायवषट् ॥ ऐं ५ कह २ वम २ क
वचाह ॥ ऐं ५ दम २ घाट २ नेत्रत्रयायवौषट् ॥ ऐं ५ विद्यातय २ विधि २ ऐं ३ फट्

८३ अस्ताफट् ॥ आधारशक्तिकमलाशक्तयेत्यादि ॥ ८ ॥ सिंहासनाय ३ ॥ ध्यानं ॥
 सुरासुरमथोत्पाने क्षीराक्षोमागरोत्तमे ॥ तत्रोत्पन्नामहादेवी दिव्यकन्यामानो
 रमा ॥ लाक्षारसनिभादेवी त्रिनेत्राननवयौवना ॥ वक्त्रं त्रिशूलवज्रं च दिशि
 ममुद्गरे तथा ॥ गदापद्मवलेपात्रं दक्षिणरोनविराजिता ॥ फेटकं चोक्तु शंखं
 ठ ॥ मुराण् स्वदायु कुम्भयोः ॥ नीलोत्पलाभयं विन्दु वामहस्ते विधारिणी ॥
 दिव्यरत्नरुपा तोषा हेमाभरणाभूषिता ॥ श्वेतपद्मा ॥ सनासीना वडपद्मा
 मनस्थिता ॥ ऐवं ध्यात्वा महादेवी आरूपा दिव्यरूपा ॥ इति ध्यानं ॥ वृः

ताराणादि ८ ॥ असितांगादि ८ ॥ ऐं ५ मूं ॥ आनन्दशक्तिभैरवानन्द श्रीमहाविद्यारजेः
 श्रीं कुलकुम्भभहारिका ॥ १ ॥ य अतिमुत्तये ॥ ३ धा ॥ वलि ॥ वः
 डंग ॥ १ ॥ वज्र ॥ अष्टोरास्तेरा विर्यं जलिः ॥ वलि ॥ आवाह्य ॥ यो निमुद्रा ॥ जप
 ॥ स्तोत्र ॥ लाक्षारसनिभादेवी सिन्दूरारूपा शोभिता ॥ अष्टादशभुजाकिर्णा
 शस्त्रालंका ॥ रभूषिता ॥ क्षीरोदमथनोन्मत्तमलिद्वयंतथापरे ॥ संसारमो
 हनी देवी सृष्टिस्थित्यंतोकारिणी ॥ देवदेव्याः वरं तोयं रिपूहंकारभजनी ॥ भयं
 भित्वा त्रियं दत्वा पातुकादम्वरे श्वरी ॥ अखण्डः करशानो धंकरपरशुधारि

राणी ॥ स्वच्छन्दस्फुल्लेराकारं निदेहिकुरूपिणी ॥ वाक्यनलह ॥ भजगंधादि
इतिकुम्भपूजा ॥ ॥ ततो महापात्रपूजनं ॥ अधोरास्तेन्याशः ॥ ॥ ऐं पकाः
रासनाय ॥ ॥ ध्यानं ॥ लाक्षारसनिभा देवी जवाडादिमरागिनी ॥ यौवनातरु
णापांगी त्रिनेत्रा दिव्यरूपीणी ॥ महिरानन्दचैतन्या दशाष्टाभुजधारिणी ॥
स्वप्नत्रिशूरवज्रचदिरिण्डमं मुद्गरतथा ॥ गदापद्मवरं पात्रं सव्यहस्ते वि
राजिता ॥ फेरकं कुशघटं च मुराडखड्गाङ्गकुम्भयोः ॥ नीलोत्पलाभयं वि
न्दुवामहस्तेषु धारिणी ॥ दिव्यरत्नकृता तोयहेमाभरणभूषिता ॥ श्वेताप

सना देवी वडपद्मोपरिस्थिता ॥ एवंरूपमहादेवी वारुणी दिव्यरूपिणी
कमेनोसिद्धिदं चैव क्रियासिद्धिसमंत्रविट् ॥ संसेव्यते महाविद्याप्रायश्चि
त्यादिशोधनं ॥ महाशान्तिकरि चैव महासंपत्तिदायका ॥ महाशान्तिकरी
नित्यं महाव्याधिरुजापहा ॥ स्वसिद्धिकरी देवी पात्रपूजा महाफल ॥ इ
ति ध्यानं ॥ ॥ अधोरास्तेन त्रिबांजलि ॥ वलि ॥ ॥ हकारसकारेण त्रि
या जलिः ॥ षडङ्ग ॥ वलि ॥ आवाह्य ॥ योनिमुडा ॥ ॥ ज्ञाप ॥ ॥ स्तोत्र ॥ कथं
विद्यालिपूरां मय रममृतमयं रक्तसिन्दूरवर्णा वृक्षाण्डखरासंभूता वह

तिं ॥ निशाश्रुषुनायापदव्या ॥ सासृष्टिस्थितिरूपासकलसुरगणास्तोत्र
यंतीसदेवी सौभाग्यदिव्यतेजो अभिमतफलदा मोक्षलक्ष्मीपुष्टा ॥ वाक्
॥ अत्रगंधादि ॥ इतिमहापात्रपूजा ॥ ॥ ततोत्रिशुद्धिपूजनं ॥ ऐं ५ ह्रं
गुरुगुरुशानन्ददेव ३ ॥ ऐं ५ परमगुरुचर्यानन्ददेव ३ ॥ ऐं ५ परम
सिगुरुमित्रानन्ददेवपाप ॥ ऐं ५ ॥ आनन्दशक्तिभैरवानन्द
रधिपतये नमः ॥ श्रीत्रिशुद्धिभद्रा ॥ रिकायपाप ॥ त्रिधा ॥ वः
लि ॥ आवा ॥ ह्य ॥ योनिमुद्रा ॥ इत्यर्पणं ॥ इतिविशुद्धिपूजा

॥ ॥ ततो गुरुमराडलपूजनं ॥ ऐं ५ ॐ अस्तायफट् ॥ ऐं ५ ॐ अंगुशः
यनमः ॥ ऐं ५ ॐ तर्जन्याय स्वाहा ॥ ऐं ५ ॐ मध्यमाय वौषट् ॥ ऐं ५ ॐ
अनामिकाय हुं ॥ ऐं ५ ॐ कनिष्ठकाय वषट् ॥ ऐं ५ ॐ अस्तायफट्
॥ इतिकरन्याशः ॥ ॥ ऐं ५ ॐ हृदयाय नमः ॥ ऐं ५ ॐ शिलसैः
स्वाहा ॥ ऐं ५ ॐ शीषाय वौषट् ॥ ऐं ५ ॐ कवचाय हुं ॥ ऐं ५ ॐ नेत्र
त्रयाय वषट् ॥ ऐं ५ ॐ अस्तायफट् ॥ इति भगव्याशः ॥ ऐं ५ ॐ शि
खास्थाने पादुकं ॥ ऐं ५ ॐ शिरस्थाने ३ ॥ ऐं ५ ॐ ललाटस्थाने ३

॥ ऐं प कुमरास्त्रे ॥ ॥ ऐं प लहदये ॥ ॥ ऐं प वंना भौ ॥ ॥ ऐं प रंगह्ये ॥ ॥ ऐं प यैः
 या नृदये ॥ ॥ ऐं प पादद्वयोः ॥ ॥ ऐं प अर अस्ताय फट् सर्वो गे पादुकां ॥ इति नर्व
 त्मा न्याशः ॥ ॥ ततो आसनपूजनं ॥ ऐं प हं श्री लंकुली त्मानन्द देव नाथ ॥
 ॥ ऐं प से श्री भृङ्गी सानन्द नाथ ॥ ॥ ऐं प क्षं श्री सस्वर्तानन्द नाथ ॥ ॥ ऐं प मं
 श्री महाकालानन्द नाथ ॥ ॥ ऐं प लं श्री पिनाकानन्द नाथ ॥ ॥ ऐं प वं श्री
 वाङ्मौलानन्द नाथ ॥ ॥ ऐं प रं श्री भुजंगी शानन्द नाथ ॥ ॥ ऐं प यं श्री
 वाली शानन्द नाथ ॥ ॥ ऐं प उं श्री अष्टी शानन्द नाथ ॥ ॥ ऐं

॥ श्री न्याशभट्टारिकायुषा पू ॥ इति आसनपूजा ॥ ॥ ततो पूजनं ॥ ऐं प
 पद्मासनाय ॥ ॥ ऐं प शवासनाय ॥ ॥ ध्यानं ॥ ॥ पद्मासिन शव
 संच दशवक्त्रं त्रिलोचनम् ॥ ॥ खवर्गं च महादीपं सर्वलक्षणा
 संयुतं ॥ ॥ खवर्गं पूर्ववक्त्रं तु दक्षिणे हस्ते शोभितं ॥ ॥ उन्नरे
 पितवर्गस्या नदूर्ध्वं रक्तं स्वभितं ॥ ॥ रक्तस्य दक्षिणे धूमं श्वेतमुन्नर
 मेव च ॥ ॥ नदूर्ध्वं पीतवर्गं च पितस्य हस्ते दक्षिणे ॥ ॥ रक्तमुन्नरमित्याहुः
 नदूर्ध्वं श्वेतमुन्नरमम् ॥ ॥ अथादशभुजो देव कवचाहारभूषितं ॥ ॥ ख

मफेटकधरदेवं विशुलमकु शंतथा ॥ भूत्रक मराउलुं श्रेष्ठ दुम्बरुख
 डाग मेवच ॥ वारांधनुसुसंभक्तं परां द्यो सुशोभितं ॥ चक्र वैव गडा
 पाणि वराभयहस्तकं ॥ काश विदूधरदेवं नानारै लंकारमणिन
 ॥ शवपीतं भवे दृशा मासने सुखसस्थितं ॥ स्व रूपं नवात्मान मरा
 लगुरुमराउलं ॥ ध्यायते सुपुत्र आत्मा क्षिप्रं सिद्धं तुमानवाः ॥ मध्ये
 ध्यानविचिन्तयेत् ॥ ॥ ऐं ५ ॥ ॐ ॥ पाप ॥ ॐ ॥ पाप ॥ ॐ ॥ पाप ॥
 ॥ वलि ॥ ॐ ५ ॥ ओमाहा ॥ ॐ ॥ पूजागुरु ॥ ॐ ॥ मरा

ल श्रीकु शिकायै पाप ॥ ॐ ५ ॥ सुस महापू जागुरुमराउल श्रीशक्त्यायै प
 पु ॥ ॐ ५ ॥ सु उपरमेष्टिगुरु मराउल श्रीदेव्यायै पाप ॥ ॐ ५ ॥ सु इपरम
 गुरु मराउल श्रीज्ञानायै पाप ॥ ॐ ५ ॥ सु अः गुरु मराउल श्री आज्ञा
 ये पाप ॥ ॐ ५ ॥ श्रीशिवतत्त्वगुरु मराउल श्रीपरायै पाप ॥ ॐ ५ ॥ श्री
 विद्यातत्त्वगुरु मराउल श्रीपरायै पाप ॥ ॐ ५ ॥ श्री आत्मतत्त्वगुरु मराउ
 श्रीअपरायै पाप ॥ ॐ ५ ॥ आज्ञाकुसुमायै पाप ॥ ॐ ५ ॥ जयायै पाप ॥ ॐ ५ ॥
 विजयायै पाप ॥ ॐ ५ ॥ श्रीअजितायै पाप ॥ ॐ ५ ॥ श्रीअपराजितायै पाप

॥ ऐं ५ हं सान्निताये पापू ॥ ऐं ५ श्रीये शान्निताये पापू ॥ ऐं ५ श्रीरै विद्या
 ये पापू ॥ ऐं ५ श्रीरै निवो त्याये पापू ॥ ऐं ५ श्रीलै प्रष्टि तिष्ठा ये पापू
 ॥ ऐं ५ श्रीकुल भैरवाय पापू ॥ ऐं ५ कुलनाथ भैरवाय पापू ॥ ऐं ५ कु
 लतन्धुरु भैरवाय पापू ॥ ऐं ५ कुलकपार भैरवाय पापू ॥ ऐं ५ श्रीकु
 लआज्ञा भैरवाय पापू ॥ ऐं ५ श्रीकुल आज्ञा देवोपापू ॥ ऐं ५ श्रीसौसी
 सुंक्षं क्षेत्रपालाय ३ ॥ ऐं ५ श्रीक्रीकुलपुत्रवटुकनाथाय ३ ॥ ऐं ५ गौ
 जीगुंगः ग्लौ श्रीकुलंगेशो श्वराय ३ ॥ ऐं ५ श्रीमहाकौमरी विज्जे ३ ॥

॥ त्रियांजलिः ॥ ऐं ५ प्रौ ॥ आनन्दशक्ति भैरवानन्द विराधि पतये ३
 न्यु ॥ श्रीनवात्मागु ३ ॥ रुमराउल भट्टारिकाय ३ ॥ ऐं ५ प्रौ ॥
 प्रौ ॥ आनन्दशक्ति ३ ॥ भैरवानन्द श्रीमहा विद्या राजेश्व ३ ॥
 प्रौ ॥ श्रीनवा ३ ॥ त्मागुरुमराउल भट्टारिकाय ३ ॥ षडं ३ ॥
 ग ॥ वली ३ ॥ ऐं ५ अघोरैः प्रोथघोरैः प्रोथघोरैः प्रोथघोरैः सर्वतः
 सर्वन्सर्वं ३ ॥ प्रैः सुं सः प्रौः रुः ५ रूपेः ३ ॥ ऐं ५ वज्रकुजिनी ३ ॥ तै
 लोक्या कर्षिणी प्रौः कामागश विरिणी लीः लीः महा क्षोभकारिणी ऐं

सौं सः ५॥ वलि ॥ ऐं ५ नमो भगवति स्मै कुब्रि वरये डां डां डू घोर अघो
रे अघोरा मुखी छां छीं किरिण १ विं चै ३ ॥ ऐं ५ नमो भगवति स्मै कु
जिका ये छ्रां छीं सुं इ चरण नमो अघोरा मुखी छां छीं किरिण १ विं चै ३
॥ ऐं ५ भगवति सिं डे ह्मूँ ह्मूँ कुजिके सुं सुं सुं खगे ऐं घोर अ
घोरे अघोरा मुखी छां छीं किरिण १ विं चै ३ ॥ ऐं ५ अष्टाविशति
कर्म भटारिकाय ३ ॥ वलि ॥ ॥ ऐं ५ समस्तमंत्रपीठोपपी
ठसि हासनपीठक्षेत्रोपक्षेत्रसंदोहोपसंदोहः दिव्यसिद्धि सम

यचक्र ३ ॥ ऐं ५ उक्तानुक्तं यत्किञ्चिन्नत्सर्वं हृदयाय ३ ॥ आवा
ह्य ॥ धेनु योनि मुद्रा ॥ विंदूत्रय ॥ इति श्री गुरु मराठ ८ लपूजा ॥
॥ ततो कर्मार्चनं कारयेत् ॥ अथान्तसंप्रवक्ष्यामी कर्मः
चने समात्मभेत् ॥ षडङ्ग हृदयादि च वती श्रीन्याश कारयेत् ॥
गुप्तिन्याश तथा घोरं द्वादशांगं षडङ्गकं ॥ मासिनी शत राशिं
च षट् इतीरत्नपंचकं ॥ नवात्मानवद्योरास्ते षोढाश्चैव त्रिविद्यता
॥ घोराष्टकं त्रिखराट् च स्रकाक्षरी बीजपंचकं ॥ उडि षड् श्रुत्या

शादि सोढा श्रेष्ठमुदाहृतं ॥ एतेन्यासो विना देवी नहिकर्मा र्जनं भवेत् ॥ कमल
कुल द्वीपच वर्वरावद्वरूपीणी ॥ महंता रिका कोंकरा ख्या कराशुंग जयंज
येत् ॥ ॥ प्रथमवतिशिन्याशंकारयेत् ॥ थवके आसनने ॥ सें ५ ज्ञांहीई
हैंहैंहैंः वज्रमराउलेवज्रिणी अमोघे महाघोरे गागविश्रुद्धे शोधय २ हूँफहूँ
वज्रासने पा पू ॥ वज्रमराउले आकाशे अपुष्यधे क्षेपनं ॥ ॥ सें ५ हैंहैंहैं मातृ
मराउले शोधनीने जश्चिनीहूँफहूँहैं ॥ सूर्यमराउले पुष्यधे क्षेपनं ॥ ॥ सें ५
हैं अनंततयथि पादद्वयोः पादुकां ॥ सें ५ होकालगधिगुल्फद्वयोः ३ ॥ सें ५

हीरुद्रगुंथि जघाद्वयोः ३ ॥ सें ५ हां जेष्ठगुंथि उरुद्रद्वयोः ३ ॥ सें ५ हूँ वामगुं
थि कटिद्वयोः ३ ॥ सें ५ हूँ कामगुंथि लिङ्गस्याग्रे ३ ॥ सें ५ हें पिश्रुगुंथि मेढु
स्थाने ३ ॥ सें ५ हें ब्रह्मगुंथि ब्रह्मस्थाने ३ ॥ सें ५ हूँ सूर्यगुंथि नाभि मध्य ३
॥ सें ५ हूँ सोमगुंथि पृष्ठ मध्ये ३ ॥ सें ५ हें प्राणागुंथि उदले ३ ॥ सें ५ हें जीः
वगुंथि हृदये ३ ॥ सें ५ हां विष्णुगुंथि कंठे ३ ॥ सें ५ हां रुद्रगुंथि तालुमः
ध्ये ३ ॥ सें ५ हें ईश्वरगुंथि शिल स्थाने ३ ॥ सें ५ हः सदाशिवगुंथि मूर्द्धि
स्थाने पादुकां ॥ इति ग्रन्थिन्याशं महारिकाय पा पू आवलि ॥ ॥ सें ५ ३

सो नमो हृदयार नमः ॥ ५५ ॥ ओरेई ॥ रिसर ॥ ५५ ॥ घोर बो नरे
हृदी साये वोषट् ॥ ५५ ॥ सवन सर्व संधे ॥ कव चायह ॥ ५५ ॥ उँ ॥ ५५ ॥
जुँ सः हौं न्यो नि ॥ पात्त्रने नेत्रयायवषट् ॥ ५५ ॥ ॐ नमस्ते रुद्र सपे
हः अस्तायफट् ॥ इति अघोरन्याशभट्टारिकाय पापू ॥ वलि ॥ ५५ ॥
हं सिद्धये पाहृदयो ॥ पादुका ॥ ५५ ॥ सौ म धाये जानुद्वयोः ॥ ५५ ॥
विश्व नारायण रुद्रयोः ॥ ५५ ॥ सौ लक्ष्म्ये गुह्ये ॥ ५५ ॥ सौ दीपायनाभ्यो ॥ ५५ ॥
॥ ५५ ॥ सौ मानिन्यै हृदये ॥ ५५ ॥ सौ शिवाय करणे ॥ ५५ ॥ सौ वसुधायै ॥ ५५ ॥

श्रीविजयनाथक्षेत्रपालश्रीसर्वव्यापीसूक्ष्मीशास्त्रातीतश्रीकु
प्रकानन्ददेव३॥पश्चिमे॥इतित्रिकोणाद्यापितपंचपीठपूजा
॥ मध्ये सपूजनं॥सं५श्रीअवतारपीठेश्रीकुत्रिये३॥मध्ये
सं५श्रीशैलवपीठेश्रीवर्वरायै३॥नैऋत्ये॥सं५श्रीमहेद्वीपीठेश्री
महेतारिकायै३॥पूर्वे॥सं५श्रीवैलाशपीठेश्रीकमलायै३॥
वसुधे॥सं५श्रीआदिविमलेश्रीमातंगिन्यै३॥सं५श्रीसः
वसुधे॥सं५श्रीआदिविमलेश्रीमातंगिन्यै३॥सं५श्रीसः
वसुधे॥सं५श्रीआदिविमलेश्रीमातंगिन्यै३॥सं५श्रीसः

श्रीसिद्धिविमलेश्रीचंपकायै३॥उत्तरयेति॥सं५श्रीसम
विमलेश्रीकुत्रिकायै३॥वलि॥इतिविमलयंचकं॥॥अः
विद्वादशस्थानेपूजनं॥सं५श्रीमालिन्यै३॥सं५श्रीमनिरि
कायै३॥सं५श्रीचेलार्यायै३॥सं५श्रीमहाशायै३॥सं५श्रीगुला
र्यायै३॥सं५श्रीआज्ञाविशायै३॥सं५श्रीगेवरायै३॥सं५श्री
वरायै३॥सं५श्रीपूचरायै३॥सं५श्रीनिरप्रायै३॥सं५श्रीशूआ
यै३॥सं५श्रीआज्ञास्थानगुणायै३॥पूर्वदिग्गुणायै३॥

ॐ ॥ पवर्गोपे ५ गुह्यचरित्रे सेशाये इत्यादि किलिकि लाये राजदेवायु ५ ॥ कुत्रिका
सक्षभैरवपाप ॥ जानो ॥ ॐ ५ यवर्गो यो ४ आचार्ये कार्तिके ओशये नामु रागये का
नराये छिपिकाये कोनेये कुत्रिकाये ओक्षभैरवपाप ॥ ॥ पादे ॥ ॐ ५ शवर्गो शो
पादयो देवीको हः हाये महालक्ष्म्ये भीषणये कोषये ईशानये कुत्रिकाये अक्षभै
रवपाप ॥ ॥ वलि ॥ ॥ अत्र कूटद्वयं ॥ आवमने ॥ धनु योनि मुद्रादर्शनं ॥ ॥
ॐ ५ श्रीगगनानन्ददेव ३ ॥ मध्ये ॥ ॐ ५ कुमुदानन्ददेव ३ ॥ ॐ ५ श्रीपद्मानन्ददेव ३
॥ ॐ ५ श्रीभैरवानन्ददेव ३ ॥ ॐ ५ श्रीदेवानन्ददेव ३ ॥ ॐ ५ श्रीकमलानन्ददेव ३ ॥
ॐ ५ श्रीशिवानन्ददेव ३ ॥ ॐ ५ श्रीरामानन्ददेव ३ ॥ ॐ ५ श्रीरुद्रानन्ददेव ३ ॥ अत्र
ॐ ५ नवनाथेन पूर्णो दि इशानानां संपूज्य ॥ ॥ अत्र कूटद्वयं ॥ आवमने ॥ मुद्रा

दर्शनं ॥ ॥ ॐ ५ श्रीसूर्यानन्ददेव ३ ॥ ॐ ५ श्रीतीर्थानन्ददेव ३ ॥ ॐ ५ श्रीखेचरान
न्ददेव ३ ॥ ॐ ५ श्रीगर्भानन्ददेव ३ ॥ ॐ ५ श्रीसिंहानन्ददेव ३ ॥ ॐ ५ श्रीजयानन्ददेव ३
॥ ॐ ५ श्रीमित्रानन्ददेव ३ ॥ ॐ ५ श्रीभूटानन्ददेव ३ ॥ ॐ ५ श्रीविमलानन्ददेव ३ ॥
ॐ ५ श्रीखड्गानन्ददेव ३ ॥ ॐ ५ श्रीमुद्रानन्ददेव ३ ॥ ॐ ५ श्रीरत्नानन्ददेव ३ ॥ ॐ ५
श्रीकेशवानन्ददेव ३ ॥ ॐ ५ श्रीअमृतानन्ददेव ३ ॥ ॐ ५ श्रीशोभानन्ददेव ३ ॥ पू
र्णो दि इशानानां यो उ शपत्रे संपूज्य ॥ ॥ मध्ये ॥ अत्र कूटद्वयं ॥ आवमने ॥ मुद्रादर्श
नं ॥ पूर्वदक्षिणतः पूष्ये न ॥ ॐ ५ श्रीअकलाये पुमानन्ददेव ३ ॥ ॐ ५ श्रीकुलायै मि
त्रानन्ददेव ३ ॥ ॐ ५ श्रीकर्णिकायै मध्वानन्ददेव ३ ॥ ॐ ५ श्रीकुलायै विष्ण्वानन्ददेव ३
॥ दक्षिणतः कृत्तिके पुष्ये न ॥ ॥ ॐ ५ कुलायै उग्रानन्ददेव ३ ॥ ॐ ५ श्रीसि

द्वायैशिवानन्ददेव ३॥ सं ५ श्रीलक्ष्मायै विमलानन्ददेव ३॥ सं ५ श्रीकुलसुन्दर्यायै लोकानन्द
 देव ३॥ प्रश्वेमदलपुष्पेरा ॥ ॥ सं ५ श्रीरक्तायै उत्तमानन्ददेव ३॥ सं ५ श्रीसानाख्यायै उ
 द्भवानन्ददेव ३॥ सं ५ श्रीविमलायै अभयानन्ददेव ३॥ सं ५ श्रीकटिलाननायै लोकान
 न्ददेव ३॥ उत्तरदले श्वेतपुष्पेरा ॥ ॥ सं ५ श्रीवेगायै सुधमानन्ददेव ३॥ सं ५ श्री
 मनोज्ञादनायै प्रधानन्ददेव ३॥ सं ५ श्रीउन्मनायै लयानन्ददेव ३॥ सं ५ श्रीमोहनायै
 विजयानन्ददेव ३॥ पापू ॥ सं ५ श्रीपुःवाज्यघोडसप्रत्रेपूर्वादिउत्तरांनंसंपूज्य ॥ ॥ मध्ये
 ॥ अत्रकुट्टयं ॥ आचमनं ॥ धनुःयोनिमुद्रादर्शनं ॥ ॥ सं ५ श्रीशिवतत्त्वाधिकार
 ऐशानये ३॥ सं ५ अघोरैकीक्षः परमघोरै हं घोररूपै हं घोरामुखिर्भीमभीषः
 रत्नावम २ धिव २ रू २ पटू श्री हं फटू विद्यातत्त्वाधिकारे अपराये ३॥ सं ५ सं

ॐ ह्रीं क्लीं आ नमस्तत्त्वोधिकारे परापराये पाप ॥ ॥ मध्ये ॥ मूलविज्ञानत्रियोजः
लिः ॥ ॐ ५ क्रौं आनन्दशक्तिभैरवानन्दवीरो धिपतये मूर्ति ॥ पाप ॥ ॐ ५ मूर्ति ॥ अ
नन्दशक्ति भैरवानन्दविराधिपतये श्रीमहा विष्णु शाराजेश्वरी
क्रौं पाप ॥ ॐ ५ क्रौं मूर्ति ॥ आनन्दशक्तिभैरवा नन्दवीराधिप ॥ प
तये सौं क्रौं मूर्ति ॥ पाप ॥ खंडग ॥ वलि ॥ ॥ ॐ ५ समस्त सं
पीठ क्रौं मूर्ति ॥ सिंहासनपीठाप्रणीठक्षेत्रोपक्षेत्रसन्देशो
वह संदेश क्रौं मूर्ति ॥ दिव्यसिद्धिसमयचक्र ३ ॥ ॐ ५ उक्तानुक्तं यत्किञ्चि
नेत्यर्थ इदं या य २ ॥ बलिंगुकर स्थाहा ॥ आवाह्य ॥ धेनु वा निमुद्र
॥ बिन्दु च ये ॥ इतिकर्मचक्र पूजा ॥ ॥ ततो निषण्णार्चनम् ॥ ॐ ५ नमो

भगवति रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो बामु रजय प्रे ॥ ॐ नमो श्वाका श्वाका
रणा प्रे ॥ ॐ नमः सर्वकामार्थसाधकानां प्रे ॥ ॐ नमो अजसमरी रणा प्रे
ॐ सर्वत्र प्रतिहत गती रणा प्रे ॥ ॐ नमो स्वरूपपरुषपरिवर्तनीनां प्रे ॥
॥ ॐ नमो सर्वतन्त्रवशीकरेण बाटनी न्ना रणा समस्तकर्मपरिवर्तनीनां
प्रे ॥ ॐ नमो सर्वमातृगृहहृदयपरमसिद्धिप्रे ॥ ॐ नमो सर्वकर्महृद
नकरसंसिद्धिकरप्रे ॥ ॐ नमो मातृ रणा वननं भुवं प्रे ॥ इति रुद्र
पूजा ॥ ॥ अथ मातृ स्वपूजनं ॥ ॐ नमो अद्यो रजमाद्ये वरदे विमलः
श्रीमद्ब्रह्माय रणीविद्ये ॥ इत्यादि स्तवं ॥ मा को वे बा ई चा म ॥ इति ॥
ति मातृ स्वराष्ट्रपूजा ॥ ॥ ततो मां वरदाष्ट्रपूजा ॥ ॐ नमः चासुराष्ट्रपूजा ॥

॥ ॐ नमो दुर्दकेशिप्रे ॥ ॐ नमो ज्वलितकेशिप्रे ॥ ॐ नमो विद्युजिह्वे प्रे ॥ ॐ नमो
ताम्रकाशिप्रे ॥ ॐ नमो पिंगलवृचप्रे ॥ ॐ नमो विकटदंष्ट्रे प्रे ॥ ॐ नमो
द्वे प्रे ॥ ॐ नमो मांसशोणितमृगसंप्रिये प्रे ॥ ॐ नमो हंस प्रे ॥ ॐ नमो
नृत्त प्रे ॥ ॐ नमो विजम्भ प्रे ॥ ॐ नमो मायात्रैलोक्यरूपसहस्रपरिव
र्तमां प्रे ॥ ॐ नमो नुद प्रे ॥ ॐ नमो चिरि प्रे ॥ ॐ नमो भिरि प्रे नमः ॥
ॐ नमो हिन्द प्रे ॥ ॐ नमो त्रासनी प्रे ॥ ॐ नमो भ्रामरि प्रे ॥ ॐ नमो वि
दावलि प्रे ॥ ॐ नमो शोभसि प्रे ॥ ॐ नमो मारुति प्रे ॥ ॐ नमो सजी
वनी प्रे ॥ ॐ नमो हारी प्रे ॥ ॐ नमो गेरि प्रे ॥ ॐ नमो घुरि प्रे ॥
ॐ नमो मातृगणाय प्रे ॥ ॐ नमो ॐ नमो चासुराष्ट्रवरदेवी नमः ॥

इति संत्रयः ॥ पूजा ॥ ॥ अथ निरवडा पूजा ॥ ॥ ऐं ५ मूर्त्ति ॥ रुद्र खण्ड मन्त्रि खण्ड मन्त्र
 त्रिखण्ड त्रिखण्ड महा रिकाय पाप ॥ छंडा ॥ वलि ॥ ॥ आवाह ॥ त्रिखण्ड मूः
 ॥ ॥ वीं ५ त्रय ॥ इति त्रिखण्ड पूजा ॥ ॥ ततोः मू ५ त्रिखण्ड पूजनं ॥ ऐं ५ आ
 धार शक्र येत्यादि ॥ ८ ॥ ऐं ५ मूर्त्ति मरु लासनाय २ ॥ ऐं ५ चन्द्र मरु लासनाय २
 ॥ ऐं ५ चन्द्र मरु लाधिपतये बुध पेतासनाय नमः ॥ ऐं ५ अगनि मेड लासनाय २
 ॥ ऐं ५ अग्नि मरु लाधिपतये रुद्र पेतासनाय २ ॥ ऐं ५ बुध मरु लाधिपतये
 ॥ ऐं ५ बुध मरु लाधिपतये इश्वर पेतासनाय ३ ॥ ऐं ५ शक्ति मरु लासनाय ३
 ॥ ऐं ५ शक्ति मरु लाधिपतये सदा शिव पेतासनाय ३ ॥ ऐं ५ वृषासनाय ३ ॥ ऐं ५
 शिव पेतासनाय ३ ॥ ॥ ध्याने ॥ वृष भे संस्थितं देवं धवर्त्तरूपं शोभितं ॥ ऐं कवः

ॐ त्रि न च व भुजाष्टा दशधारितां ॥ उम्बर रूपं अंबारोच स्वप्नं कुशवज्रकं ॥ शं
 खे च वेनवाद्यं च वरदाभयदक्षिणो ॥ वामे स्वङ्गागभूलं च धनुः फलकपा
 सक ॥ घंठा कपालवेलु च अभयं भयनाशनं ॥ पद्मे नवद्वि तजानु वामो
 र ॥ च देवती ॥ एक वक्रा त्रिनेत्रा च अहं गावर्त्त वर्णिता ॥ द्वि उजां वर
 दां दक्षे सिंहं त्वाभय सर्वसु ॥ नामाभरण शोभाढ्यां सर्वलक्षण संयुतं
 ॥ भैरवान्दरूपोयं जेष्टं जेष्टपु त्रितं ॥ एवं ध्यात्वा महादेवं शिष्टं मि
 त्तु निमानवा ॥ ॥ ततः पूजनं ॥ अथार ॥ वज्र ॥ वलि ॥ ऐं ५ अजिताय ३
 ॥ ऐं ५ विजयाय ३ ॥ ऐं ५ श्री अजिताय ३ ॥ ऐं ५ श्री अमराजिता देव्यै ३ ॥ ऐं ५ जे
 म्पनी देवी ३ ॥ ऐं ५ श्री लामा ने देव्यै ३ ॥ ऐं ५ श्री मोहनी देवी ३ ॥ ऐं ५ श्री आ

दधरादेवो ३॥ वलि ॥ वतिशि ॥ ४॥ ॥ ऐं ॥ आनन्दशक्तिभैरवानन्द
 वीराधिपतये मूर्ती श्रीपश्चिममूलस्थानभद्राहारिकाय ३॥ ऐं ॥ पञ्च
 आनन्दशक्ति ॥ भैरवानन्द श्रीमहाविद्या विरजेन्दुरी मूर्ती श्री
 पश्चिममूल स्थानभद्राहारिकाय ३॥ ऐं ॥ मूर्ती आनन्द
 शक्तिभैरवानन्द विराधिपतये मूर्ती मूर्ती श्री पश्चिममूल
 स्थानभद्राहारिकाय ३॥ वडंग ॥ वलि ॥ ॥ आवाह्य ॥ लिंग
 योनिमुद्रा ॥ ऐं ॥ वृषासनाय ३॥ ॥ ऐं ॥ सिंहारसनाय ३॥ ऐं ॥

ऐं ॥ आनन्दशक्तिभैरवानन्द विराधिपतये मूर्ती श्रीपश्चिमनिर्वाण
 जेष्ठ ॥ जेष्ठभद्राहारिकाय ३॥ त्रिधा ॥ वलि ॥ ॥ अघोरेण शिखाभने
 सा ॥ त्रिधा ॥ वलि ॥ ॥ साङ्गाय ॥ वलि ॥ ॥ आवाह्य ॥ लिंग योनि
 मुद्रा ॥ तर्पण ॥ ॥ अथ लुदेवमूलस्थान पूजनं ॥ अघोर ॥ वज्र ॥
 वतिशि ॥ हकारसकारमूलस्थाने त्रिधा ॥ वलि भवगुलिसं ॥ आवाह्य
 ॥ लिंग ॥ योनिमुद्रा ॥ तर्पण ॥ ॥ सप्ततन्त्रपूजनं ॥ त्रिधा ॥ वलि ॥ ५॥ ॥
 सि ॥ का ॥ कु ॥ त्रि ॥ कुरुल्लिनि ॥ खण्ड १ ॥ खण्ड ३ ॥ मण्डल ॥ ॥ नवरात्र
 सप्तमण्डल ॥ वाहनदेव ॥ ॥ ततो कोमारिपूजनं ॥ वकारेण करंगं न्याशः ॥ ॥
 ५५ मयूरसनाय ३॥ ॥ ध्यानं ॥ महामयूरमाहूता कोमारी त्रिधैरुपिणी ॥ श

लक्ष्मि विदुमुडाच व्याये कोप्रारिगुह्यकी ॥ इति ध्यानपुष्पनमः ॥ ॥ अघोर ॥ वज्र ॥
 वतिशि ॥ हकारसकारेन त्रियं बलिः ॥ बलिः ॥ ५ ॥ सि ॥ का ॥ कु ॥ त्रि ॥ त्रिधा ॥ बलि ॥
 संप न नदिने नमः ॥ संप म महाका ॥ लाय नमः ॥ ॥ संप चं प को की कूं क्षु को
 क्षु की को प्रारी विदे ॥ त्रिधा ॥ षडंग बलि ॥ ॥ साङ्गा य ॥ बलि ॥ त्रिशि ॥ स्वा
 पद्य ॥ यो त्रिमुद्र ॥ तन्परा ॥ निर्जरा छाये ॥ ॥ ततो बलि प्रदाने ॥ संप ॥ हं श्री
 सौ ॥ सौ अजर आपकुं भ भव इडा श्वारत धैव च ॥ इन्द्र मूर्ति श्व उल्कास्य कुम्भारणे
 रिपु मईनी ॥ समुक्तो लूककाय श्व ॥ ललापादो कंदे हका ॥ हे रावत ॥ श्व ओघाम्ना
 ओ वधी श्व न थापरं ॥ अंतको अथ वाङ्ग श्व ॥ कमलाच वलानना ॥ गो मुख श्वे व घरा
 ल ॥ तन्म तन्म एतु धारकं ॥ छटा तोप जटि धी हं ॥ हंकारो एते भते श्वरं ॥ तं कपा सि

स धा चान्य धानु वडु श्व दारुक ॥ दृष्ट करारा ता क्रान्तस्त डिडा स्या विरस्य धा
 ॥ दंतुरो धन द श्वैवः नाग कर्णः प्रवराडवान् ॥ फेत्कारो वीर सिंह श्व ॥ भृकु टी क्षो मघा
 नुर ॥ पुगा ली रो एव श्वैव ॥ ल म्यो धो व लसलस्तथा ॥ भुक्क नुरा षडा लास्य लु
 ना सो हृद्र कस्तथा ॥ क्षयांतक लुप चाश ॥ क्षेत्रपाल उदाह ता ॥ प श्वा श ड रा मु
 दारे स्थान स्या क्षत्रपालका ॥ शेषावरण विहीनस्त ॥ क्षेत्रपाल चतुर्दशः ॥ स्क
 तिंगे च हंकारं भ्रम शाने च भयावहं ॥ महा लो मी वने घोर ॥ श्वा लातु सेव से
 सदा ॥ स्क व से व दे वा थ ॥ विजाल वद नो वसे ॥ घरा ए वोग हावाले पद्मः
 त्व से जरा चरः ॥ संग मे भूरि धारोद्यः पद्य ते मरु तस्तथा ॥ निर्म रे श्व व रिंगा प्रा
 हो निधाने मरिग भद्रक ॥ रस क्षेत्रगारा ध्य सो ॥ पञ्च बाटे सु को सुकः ॥ अर राये

शवरं विद्या दुष्टानि मधुकल्लतः॥ चतुर्वर्गिष्महावीर्याः पालयित्वा स्थिता जगत्॥ तत्र
 क्षेत्रे सदा बालं वलि पूजा निवेदयत्॥ चत्वारस्तत्र भूपाल द्विजाद्याः गुरुते वलिं
 ॥ भूषणतत्त्वपक्षीच स्वाचारवलि कांक्षितः॥ नित्याधिकारि चत्वारः कृष्णदा इतरे जने
 ॥ वर्वरपिङ्गकी शाश्व पिङ्गभू पिङ्गलोचनः॥ दंष्ट्राकराल अत्युग्रः कपालाभरणोज्ज्व
 लाः॥ काश्मीरचन्द्र श्रीरवलेः मृगा ली मीन फल्लुषेः॥ पुष्पैर्ध्वजे ललाटो वै दीपे
 धुपैर्लुगुलैः॥ भावितात्मभि रार्थेश्वरः कमपूय परायणैः॥ घण्टा वाद्यैश्च गीता यैस्त
 र्पिता कामदा सदा॥ मन्त्राणां नेन सर्वेषां विधि वदति दानतः॥ ननु भिक्षं भवेत्तत्र न
 प्रसर्गादिकं भयं॥ नित्यं पुण्ड्रितो राजा सर्वेषां वत्स भो भवेत्॥ रसिता ह भवते कामा
 संगमे च सदा भवेत्॥ हं ५३ं क्रीं हं असुकाय अवतर २ क्षे त्रपालेन हावले कपिले

कदाभार भा सुर त्रिनेत्र ज्वाला मुख गधं पुष्पं वलि पूजां गृह्ण २ भेरवरूपेण नुलु २
 नुरु २ ख २ ल २ क्रे २ क्रे २ हः महाडाम राधिपत ये स्वाहा॥ वाक्यन सह दुमा जुस
 ॥ ॥ सु॥ हं क्रीं श्रीं ह्ये लौं सर्व पीठा पपीठा निद्रोप डार मेव च॥ क्षे त्रोपक्षे
 त्रसे दोहा सर्व दिग्भाग स्थिता॥ योगिनी योगवी रेखा सर्वे यत्र समागताः॥ इदं
 पञ्च महाचक्रे श्रीनाथो वरदो मम॥ ये भक्त्या सासने देवी गुरु पादा र्चने रता॥ सर्व
 सिद्धि प्रदाता मे देवी तेषां भवेत्सदा॥ वीरराज योगिनी नां च ये दिव्य निमहिता
 ले॥ तेनात्रां वलिं देवी समया न्या लमे लके॥ भुति स्तुति स्मरणं शुचि र्मया
 समेदो स्थिती वितं॥ निकृतं यन्मुद्राणां योगिनी गण संकुलं॥ कुरु नी निरुत्त
 प्रा नि दुर्भिमितान्कु भाषितं॥ ॐ कारादिषु यो पीठा त्रयसारा प्रकीर्तिता

॥ आषधी धातु संरोहः दिशा सुविदिशा सुचः ॥ मही पाताल वृषारोः सर्व स्थानान्तरेषु
 च ॥ योगिनी योग युक्तात्माः समेति संति साधकाः ॥ वीर कर्म सुवीर इत्युत्सर्जति
 इति देवताः ॥ सिद्धाष्टपुत्रकाचा व्यासाधका क्षिति शायिनः ॥ नग रेवा ध्यामेव
 अट व्यासा सतीतरे ॥ वापि कूपेषु वृक्षेषु भ्रमस्तानेमा भ्रमरा ले ॥ नाना रूप
 राय च बट जा विविधानि च ॥ तेपि सर्वेपि संतुष्टा वलिंगं नु नुर्द्धतिः ॥ शरणा
 गतो हं सर्वेषां सर्वे मेव फलप्रदं ॥ प्रयत्नं जन्म मारयाते करिष्यामि च यत्कृतं
 ॥ वलि पुष्य प्रदानेन संतुष्टा मम चिंतका ॥ सर्व कर्मानि सिद्धिस्तु सर्व दोष
 प्रशान्तयेत् ॥ शिव शक्ति युसा देन श्री कुञ्जिका नमाम्यहं ॥ वाक्येन सह मूल
 स्थानसः ॥ ॥ त्वाकमहा बलिन धुन के ॥ ॥ आवात्य ॥

जथा शक्ति मुद्रा ॥ नर्परां ॥ ॥ धूप दीप नैवेद्य छाये ॥ ॥ जाप ॥ स्तोत्र ॥ श्री
 सम्भर्ताः ताहा गुनित्यं ॥ इन्द्र स्पे वीतं ॥ यथा वारा वाक्येन सह ॥ ॥ अस्मत् श्री ३
 इष्ट देवतायाः पंचोपचार पूजा निमित्ता धेन अस्माकं सगरापरिवाराणां इत्या
 दि ॥ ॥ क्षमा स्तुति ॥ प्रीत ध्येता ॥ एकानेक ॥ नृपि पूजायाये ॥ ॥ पञ्चतर्प्य
 रायाये ॥ ॥ गवचदक्षिणा छायेके ॥ शिरसरदीपादिसमय अग्नि छाये ॥ धु
 प दीप ॥ जाना नैवेद्य देव्या के पूजा वरिन छाये ॥ ॥ ततः धुकि निहक काया
 वल्लुखाति चके ॥ सकलैः पिता ओयं ॥ आभरणादुपुयासं सपिकाया वः गल
 चाकः शील काया वछाये ॥ ॥ समय छाये देव स्वे ॥ न किं आदिन समये
 पात्र ॥ विये ॥ अष्टाविंशति ॥ अभिनाशो तर्पण याये ॥ पञ्चतर्पण याय म

५॥ धासंजुलसा॥ पूजाधुडान॥ समयछाये॥ ॥ तर्पणयाये॥ ॥ स्वा
 नचिकि धनकृतिओङ्ग॥ अम्बेपुष्प॥ वलिविसर्जन॥ ॥ साशिधा
 ये॥ न्याशालिकाये॥ स्वस्थानसबलिधुंमत तथावछाये॥ ॥ भैरवयोगि
 निछगुलिलासासचोहाये॥ कलेशाभिसेक॥ वाक्य॥ ॥ उकारं चन
 सिनुर मोहनी सगो स्वानछाये॥ ॥ रुकानेक अम्बेपूर्व॥ स्वानकोकाये
 ॥ योगिन्यादिसर्वेभ्यः पुष्पादि चन्दनसिनूरनिवेदनं॥ ॥ दम्पणावलोक
 नं॥ आरति॥ पुनिस्था॥ साशिधाये॥ ॥ कोमारी धुंमत तथाव विज्जनं
 ॥ कुम्भहाये॥ ॥ तृतीयभ्रमणान्ते॥ आशिष॥ जयनिका॥ वाक्त्रेनस
 ह॥ पात्रोच्चिद्योगिन्यादिसर्वेभ्यः दत्तो॥ पात्रचोलात्र अभिसेक॥

वाक्य॥ योगिन्यादिसर्वेभ्यः सिंचयेत्॥ ॥ गंगा पुष्कर॥ गंगे उलोक्य सारं त्या
 दि॥ स्तोत्रपठये॥ ॥ पात्र अधोमुखं कृतवान् योगिर्नानं योनकं स्वशिरे॥ भै
 रवेन सिनूरादिपुष्पातस्य॥ पात्रत्रियाजलियाये॥ पात्र देवने भोकपूय
 ॥ ॥ स्वस्थानसतय कलछाये॥ ॥ श्रीभैरवादिन्याशालिकाये॥ वापु
 चके॥ स्वस्व संध्यायाये॥ श्रीदेवतायाके॥ मता विलके॥ विरभोज्यछाय
 के श्वनिधुनकाव॥ ॥ वाक्त्रेन सह तर्पणयानाव॥ वीरभोज्ययाये॥ छा
 गशिरोयोगिनादिनकाये॥ कलंक पूजायाये॥ धुमदिय नेवेश॥ जाप
 ॥ स्तोत्रवाक्यनसह॥ विसर्जनयानाव छाये॥ वापुचके॥ इति श्री उपश्रित
 मनेका न्यायनवात्मा रुद्रिका मूलस्थानमहादेवा देवार्चन कर्मा

अथ ननु इति समाप्ताः ॥



12

11

This image shows a close-up of a single page from an antique book. The paper is heavily aged, appearing yellowed and stained with various brown and greenish spots. Faint, illegible markings, possibly bleed-through from the reverse side, are visible across the page. A prominent dark, horizontal smudge or tear runs across the lower right portion of the page. The overall texture is rough and uneven.

4 Feb 1